Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.09

Impact Factor
Quarterly
Apr-May-Jun 2023

महाभारत के महत्वपूर्ण ध्येयों का अध्ययन

गोहील महेश्वरीबा

संक्षेपण :

भगवद्गीता महाभारत के अद्वितीय भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ है जिसमें आध्यात्मिकता, धर्म, कर्म और मानवीयता के विभिन्न पहलु प्रस्तुत हैं। यह शोध-पत्र भगवद्गीता के महत्वपूर्ण ध्येयों की गहराईयों में अध्ययन करता है और उनके मानवीय और आध्यात्मिक संदेशों को समझने का प्रयास करता है ।

प्रस्तावना :

भगवद्गीता महाभारत के युद्ध के परिप्रेक्ष्य में अर्जुन और कृष्ण के बीच हुए संवाद को दर्शाता है, जिसमें आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचारों की महत्वपूर्णता को प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-पत्र में हमने भगवद्गीता के मुख्य ध्येयों को विश्लेषण करते हुए उनके मानवीय और आध्यात्मिक संदेशों की समझ को प्राप्त करने का प्रयास किया है ।

भगवद्गीता के महत्वपूर्ण ध्येय:

भगवद्गीता में कई महत्वपूर्ण ध्येय प्रस्तुत किए गए हैं जैसे कि कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और धर्मयोग ध्येय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सही मार्ग चुनने के लिए मार्गदर्शन करते हैं और मानवीय जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं ।

कर्मयोग:

भगवद्गीता में कर्मयोग के माध्यम से कर्म का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है। यह ध्येय कार्यों की निष्कलंकता को प्रस्तुत करता है और सही तरीके से कर्म करने की महत्वपूर्णता को बताता है ।

भक्तियोग:

भगवद्गीता में भक्तियोग के माध्यम से भगवान की भक्ति का मार्ग प्रस्तुत किया गया है। यह ध्येय भक्ति के महत्व को बताता है और मानवीय जीवन में भक्ति के द्वारा आत्मा की शांति और सुख की प्राप्ति का मार्गदर्शाता है ।

ज्ञानयोग:

भगवद्गीता में ज्ञानयोग के माध्यम से ज्ञान का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है। यह ध्येय ज्ञान की महत्वपूर्णता को बताता है और मानवीय जीवन में सही ज्ञान के द्वारा समस्याओं का समाधान प्राप्त करने का मार्गदर्शाता है ।

धर्मयोग:

भगवद्गीता में धर्मयोग के माध्यम से धर्म का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है। यह ध्येय धर्म के महत्व को बताता है और मानवीय जीवन में सही धर्म के अनुसारजी ने की महत्वपूर्णता को दर्शाता है ।

समापन:

भगवद्गीता महाभारत के महत्वपूर्ण ध्येयों का अध्ययन करके हमें आध्यात्मिकता, धर्म, कर्म और मानवीयता के प्रति उनके मानवीय और आध्यात्मिक संदेशों की समझ प्राप्त होती है। यह ग्रंथ हमें सही मार्ग चुनने के लिए मार्गदर्शन करता है और सही तरीके से जीवन जीने की सिख प्रदान करता है ।

संदर्भ:

- महाभारत गोरखगीता प्रेस ।
- शास्त्री, चन्द्रशेखर, "महाभारतीय समाज और संगठन," संगठन और प्रबंधन: एक आधुनिक दृष्टिकोण, विकास पब्लिशिंगहाउस, २०१४।
- वर्मा, विश्वम्बरनाथ, "महाभारत में राजनीति," महाभारत की राजनीति, सामयिक प्रकाशन, २०१५।

- शंकराचार्य : गीताभाष्य;
- लोकमान्य तिलक : गीता रहस्य;
- मधुसूदन ओझा : श्रीमद्भगवदगीतायाः विज्ञानभाष्यम, कांडचतुष्टयात्मकम,
- मोतीलाल शास्त्री: गीताभाष्य भूमिका;
- गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी : गीता प्रवचन भाष्य